जनसांख्यिकीय विशेषताओं के क्षेत्रीय वितरण का विश्लेषण : जनपद रायबरेली का एक प्रतीक अध्ययन

डॉ0 अश्वजीत चौधरी[1] एवं दिनेश कुमार[2]

सारांश : जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं सहित सभी सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए अध्ययन का मुख्य विषय रहा है। यद्यपि विभिन्न विषयों की अध्ययन विधा और विषय–क्षेत्र भिन्न–भिन्न है फिर भी प्रत्येक विषय का जनसंख्या के ऐतिहासिक और क्षेत्रीय प्रतिरूप विश्लेषण में महत्वपूर्ण योगदान है। (वुड्स, 1979) भारत में उपस्थित अन्य संसाधनों की अपेक्षा जनसंख्या संसाधन का महत्व अधिक है। अतः किसी भी प्रकार के संसाधनों को प्राप्त करने के लिए जनसंख्या का उपयोग एक साधन के रूप में किया जाता है। जनसंख्या अपने मात्रात्मक तथा गुणात्मक विशेषता के अनुसार किसी क्षेत्र के संसाधन विकल्पों में अभिवृद्धि करती है। अतः किसी क्षेत्र के विकास के लिए जनसंख्या में मात्रात्मक वृद्धि की अपेक्षा गुणात्मक वृद्धि अधिक महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, लिंग–अनुपात, साक्षरता आदि जनसांख्यिकीय विशेषताओं का क्षेत्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करना तथा अधिकतम एवं निम्नतम् वृद्धि क्षेत्रों की पहचान करना। अध्ययन क्षेत्र के जनसांख्यिकीय विशेषताओं की क्षेत्र के सामाजिक संरचना, शिक्षा, नगरीकरण, यातायात की सुविधा आदि का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

मुख्य शब्द : जनसंख्या धनत्व, साक्षरता, लिंग अनुपात, आयु संरचना, जनसंख्या वृद्धि

प्रस्तावना :

किसी देश में रहने वाले मनुष्यों की कुल संख्या वहां की जनसंख्या कहलाती है। मनुष्य जिन्हें मिलाकर जनसंख्या बनती है, विभिन्न वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादक होने के साथ उनके उपभोक्ता भी होते हैं। वस्तुतः जनसंख्या के अध्ययन का महत्व मुख्यतया इस बात से है कि उससे उत्पादन के लिए कुल सुलभ मानव श्रमशक्ति तथा उनके उपयोग के लिए आवश्यक वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल मात्रा का अनुमान लगाया जा सकता है। (मिश्रा, जुलाई 2007) किसी भी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास एवं उसके प्रभावी प्रतिरूप के आकलन हेतु उसकी जनसंख्या का अध्ययन एवं विश्लेषण आवश्यक है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं समृद्धि इस बात पर निर्भर करती है कि वहां की जनसंख्या और भौतिक संसाधनों में कितना अच्छा सम्बन्ध है। (क्लार्क, 1972) जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण, सामाजिक संरचना, संसाधनों की

[1] एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
[2] शोध छात्र, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उपलब्धता, यातायात की सुविधा, मिट्टी की उर्वरता, शिक्षा आदि पर निर्भर करता है। जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण ह्रास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जनसंख्या दबाव ज्ञात करने के लिए इसके वितरण प्रतिरूपों का अध्ययन आवश्यक होता है। इसमें जनसंख्या समूहों के वे विशिष्ट प्रतिरूपों का अध्ययन आवश्यक होता है। इसमें जनसंख्या समूहों के वे विशिष्ट प्रारूप होते हैं जो औसत या सामान्य रूप से कम होते हैं। (फिन्च एवं ट्रिबार्टा, 1968) जनसंख्या का अध्ययन भौगोलिक अध्ययन का मुख्य केन्द्र है। जो क्षेत्र के अन्य घटकों को अर्थ व महत्व प्रदान करती है। इसमें क्षेत्र की जनसंख्या के जैविक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक लक्षणों का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

अध्ययन क्षेत्र :

जनपद रायबरेली उत्तर प्रदेश राज्य के मध्य भाग में अवस्थित है। इसका सृजन 1858 ई0 में अंग्रेजों के समय में हुआ। इससे पहले यह लखनऊ जनपद का भाग था। इसका विस्तार 25°49′ से 26°36′ उत्तर अक्षांश एवं 80°41′ से 81°50′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है जो उत्तर पश्चिम में 120.4 मी0 समुद्रतल से अधिक ऊँचाई पर तथा दक्षिण पूर्व 86.9 मी0 समुद्रतल से अधिक ऊँचाई पर है। इसका कुल क्षेत्रफल 32250 हेक्टेयर है। गंगा नदी जनपद की दक्षिण पश्चिम सीमा बनाती है। रायबरेली जनपद के उत्तर में लखनऊ व बाराबंकी जनपद, दक्षिण में फतेहपुर व प्रतापगढ़ जनपद पूर्व में अमेठी तथा पश्चिम में उन्नाव जनपद की सीमा स्पर्श करती है।

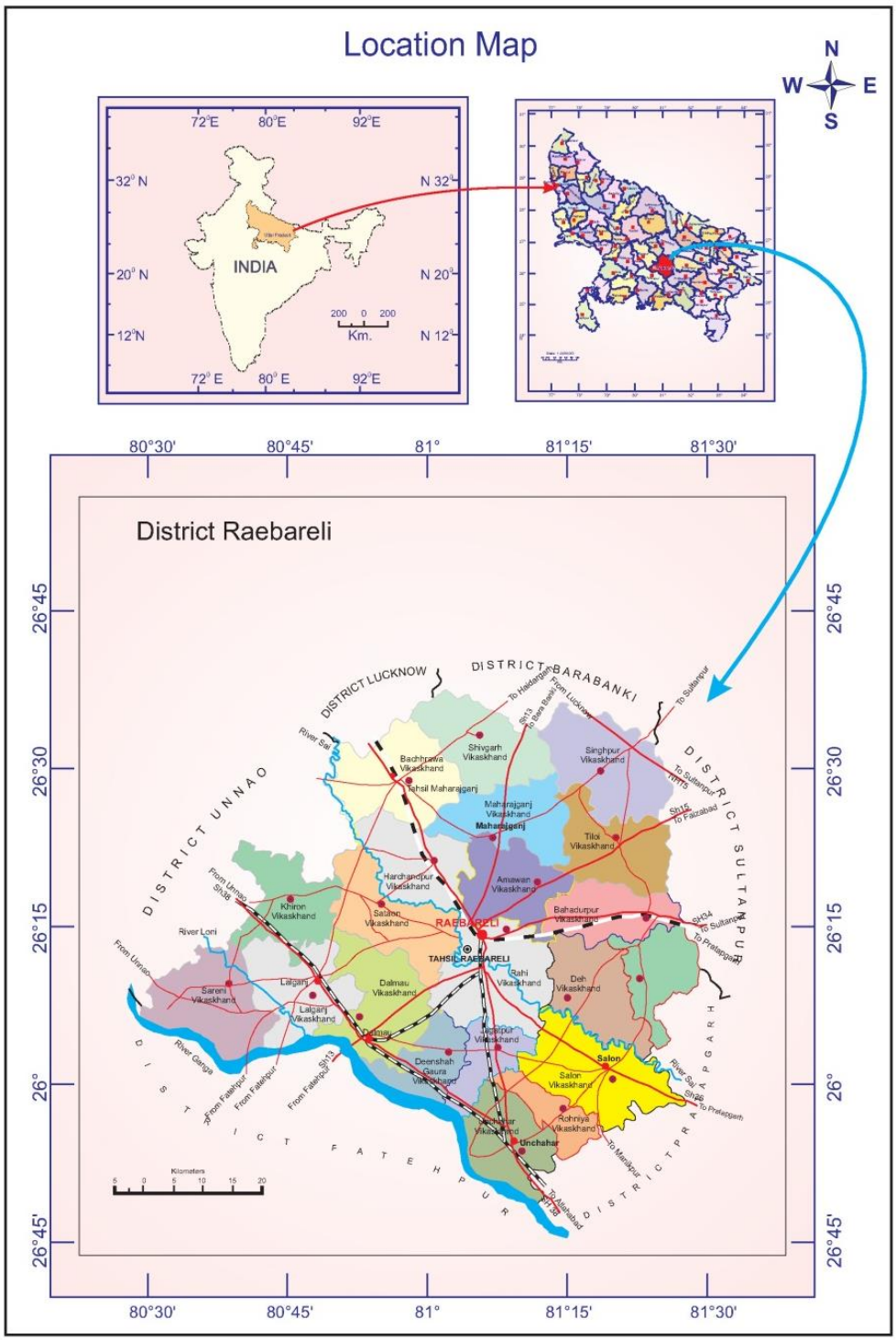

Location Map of Study Area Raebareli

आंकड़ा संग्रहण एवं विधितंत्र :

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। जिनमें जिला सांख्यिकीय पत्रिका, भारत की जनगणना एवं व्यक्तिगत सर्वेक्षण से प्रापत आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण, वितरण का प्रारूप तथा वृद्धि की प्रवृत्ति को दर्शाने के लिए सामान्य सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु विकासखण्ड को अध्ययन की इकाई माना गया है तथा आंकड़ों के सहजता, सरलता एवं स्पष्टता के लिए यथासम्भव मानचित्रों का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :

जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि एक क्षेत्र विशेष में निवासियों की संख्या में एक निश्चिम समय के भीतर जैसे 10 वर्षों में हुए परिवर्तन को दर्शाता है। यह परिवर्तन ऋणात्मक या घनात्मक दोनों हो सकता है। इस परिवर्तन को कुल संख्या या प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। (चान्दना, 2002) जनसंख्या वृद्धि के तीन प्रमुख घटक जन्म–दर, मृत्यु दर तथा प्रवास है। जो क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि एवं कमी के बीच संतुलन स्थापित करता है। जनसांख्यिकीय विशेषताओं में जनसंख्या वृद्धि किसी भी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक जागरूकता के साथ जनसंख्या के वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता आदि को प्रभावित करती है। जनसंख्या वृद्धि का अर्थ उसमें हुई प्राकृतिक वृद्धि तथा आप्रवासन द्वारा जनसंख्या में कुल बढ़ोत्तरी। देश में हुए जन्म और मृत्यु के अन्तर को प्राकृतिक वृद्धि कहते हैं। देश के बाहर जाने वाले और देश के अन्दर आने वाले लोगों के बीच अन्तर को कुल प्रवासन कहते हैं। (जेलिंन्सकी, 1971) जनपद रायबरेली में जनसंख्या वृद्धि के आंकड़े तालिका–1 में दिया गया है जिसमें वर्ष 1951 से 2011 के बीच दशकीय जनसंख्या वृद्धि के प्रतिरूप को प्रस्तुत किया गया है।

तालिका–1 : जनपद रायबरेली : जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति (1951–2011)

वर्ष	कुल जनसंख्या	दशकीय वृद्धि (प्रतिशत में)		
		जनपद	उत्तर प्रदेश	भारत
1951	1162986			
1961	1322121	+13.68	+16.66	+21.51
1971	1510812	+14.27	+19.75	+24.80
1981	1886940	+24.89	+25.49	+24.64
1991	2322810	+23.10	+25.55	+23.86
2001	2872335	+23.65	+25.80	+21.34
2011	3405559	+16.60	+20.09	+17.64

स्रोत : भारत की जनसंख्या

तालिका–1 के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि वर्ष 1951 से 1981 तक भारत में जनसंख्या वृद्धि दर क्रमशः बढ़ी है तथा वर्ष 1991 से 2011 तक वृद्धि दर क्रमशः घटी है जिनमे वर्ष 1961–71 के दशक में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर 24.80 प्रतिशत रही थी तथा उत्तर प्रदेश की दशकीय वृद्धि दर वर्ष 1951 से क्रमशः अधिक हुई है तथा वर्ष 2011 में यह कम हुई है। इसी प्रकार जनपद रायबरेली में भी जनसंख्या वृद्धि दर वर्ष 1951 से क्रमशः अधिक हुई है तथा वर्ष 1991 से इसमें कमी होना प्रारम्भ हुआ है। वर्ष 1981 में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर (24.89 प्रतिशत) रही थी। वर्ष 1951 में जनपद की कुल जनसंख्या जहाँ 1162986 थी वहीं वर्ष 2011 में यह बढ़कर 3405559 हो गई। वर्ष 2011 में भारत का दशकीय वृद्धि दर जहाँ 17.64 प्रतिशत थी वही उत्तर प्रदेश की दशकीय वृद्धि पर 20.09 प्रतिशत तथा जनपद रायबरेली की दशकीय वृद्धि दर 16.60 प्रतिशत थी। जनपद के सम्पूर्ण विकास के लिए इस जनसंख्या वृद्धि की दर को नियंत्रित करने की आवश्यकता है।

जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या घनत्व किसी क्षेत्र के जनसंख्या तथा क्षेत्रफल के अनुपात को प्रदर्शित करता है। जिसके द्वारा क्षेत्र के जनसंख्या वितरण को विश्लेषित किया जाता है तथा एक क्षेत्र की जनसंख्या का दूसरे क्षेत्र की जनसंख्या से तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। रायबरेली जनपद की जनसंख्या घनत्व की प्रवृत्ति को तालिका–2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका–2: रायबरेली जनपद : जनसंख्या धनत्व की प्रवृत्ति

वर्ष	रायबरेली का जनघनत्व	उत्तर प्रदेश का जनघनत्व	भारत का जनघनत्व
1991	506	548	267
2001	623	690	324
2011	739	829	382

स्रोत : भारत की जनसंख्या

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि भारत, उत्तर प्रदेश तथा जनपद रायबरेली के जनसंख्या घनत्व में अत्यधिक विषमता है। वर्ष 1991 में भारत का जनसंख्या घनत्व जहाँ 267 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. था, वहीं उत्तर प्रदेश का 548 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. तथा जनपद रायबरेली का जनसंख्या घनत्व 506 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. था। इसी प्रकार वर्ष 2001 में जनपद तथा उत्तर प्रदेश के जनसंख्या घनत्व में 67 का अन्तर था वहीं 2011 में यह अन्तर बढ़कर 90 हो गया।

जनसंख्या घनत्व का क्षेत्रीय प्रतिरूप

जनपद रायबरेली में जनसंख्या घनत्व के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप में असमानता प्रतिबिम्बित होता है जिसके अध्ययन के लिए जनसंख्या घनत्व के विकासखण्डवार आकड़े तालिका (3) में प्रस्तुत किया गया है।

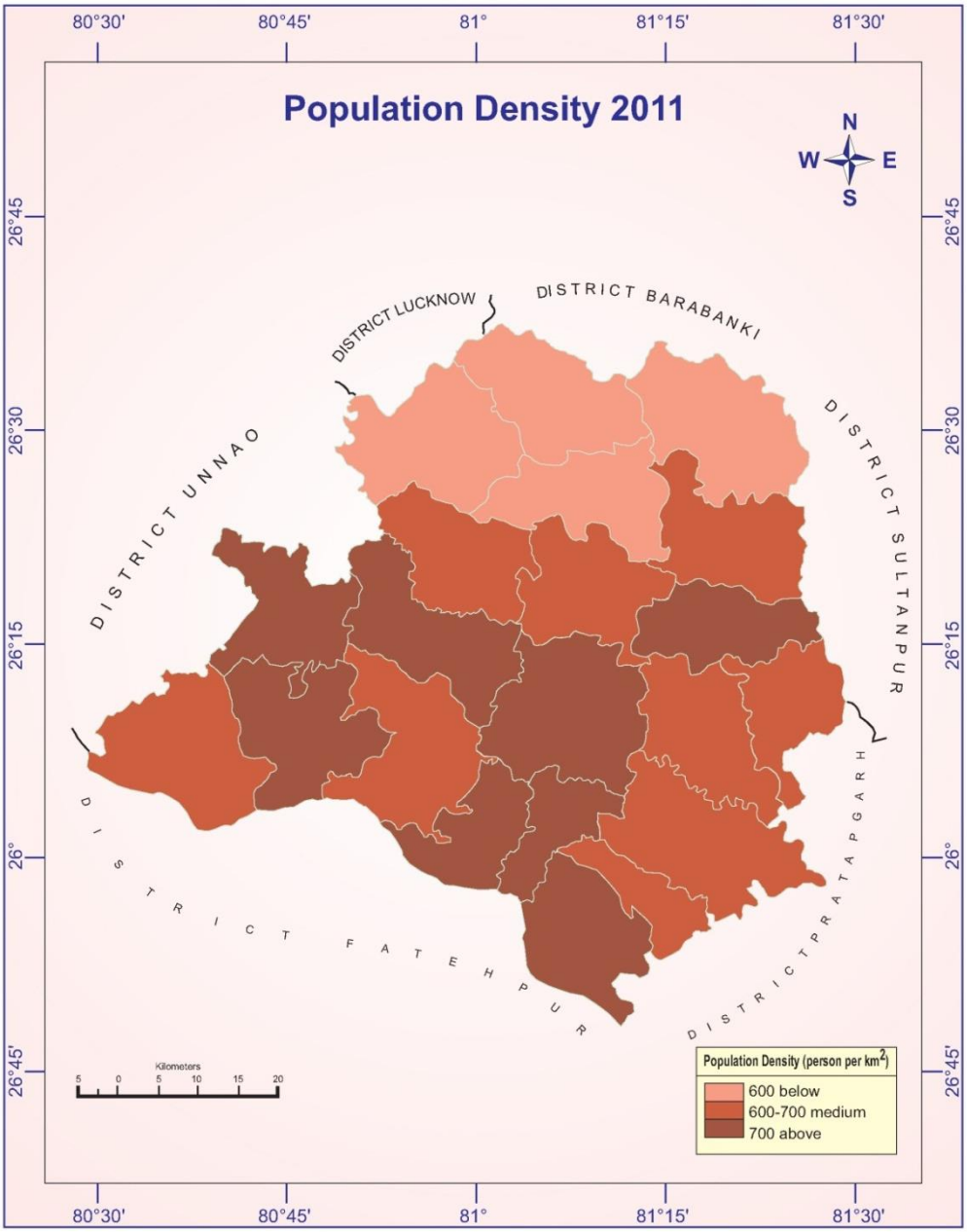

Source : District Census Hand Book-2011

Population Density District Raebareli

तालिका–3 : जनपद रायबरेली : जनसंख्या घनत्व प्रतिरूप

क्र.सं.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (किमी^{2})	गणितीय घनत्व	
			2001	2011
1	बछरावां	265	492	598
2	शिवगढ़	197	494	593
3	महाराजगंज	237	501	586
4	सिम्हपुर	249	642	562
5	तिलोई	223	565	690
6	बहादुरपुर	170	541	735
7	हरचन्दपुर	212	551	661
8	अमांवा	198	569	665
9	सतांव	225	585	739
10	राही	259	638	777
11	खीरो	208	640	747
12	सरैनी	277	566	648
13	लालगंज	223	653	730
14	डलमऊ	255	621	700
15	जगतपुर	119	679	768
16	डीह	213	616	629
17	छतोह	167	599	695
18	ऊँचाहार	200	678	748
19	सलोन	337	665	661
20	रोहनिया	112	529	648
21	दीनशाहगौर	137	694	760
जनपद योग		4609	623	739

स्रोतः भारत की जनगणना

तालिका–3 में दिये गये जनसंख्या घनत्व प्रतिरूप के विश्लेषण के लिए इसे तीन वर्गों में विभाजित किया गया है।

1. उच्च जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र (700 से अधिक) :

उस वर्ग के अन्तर्गत वर्ष 2001 में कोई भी विकासखण्ड सम्मिलित नहीं है तथा वर्ष 2011 में 8 विकासखण्ड सम्मिलित है जो क्रमशः जगतपुर (768), राही (777), खीरो (747), सतांव (739), बहादुरपुर (735), दीनशाहगौर (760), ऊँचाहार (748), लालगंज (730) है जिनमें उच्च जनसंख्या घनत्व है।

2. मध्यम जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र (600–700) :

इस श्रेणी में वर्ष 2001 में 10 विकासखण्ड सम्मिलित है तथा वर्ष 2011 में 9 विकासखण्ड तिलोई (690), हरचन्दपुर (661), अमांवा (665), सरैनी (648), डलमऊ (700), डीह (629), छतोह (695), सलोन (661), रोहनियां (648) मध्यम जनसंख्या घनत्व के क्षेत्र में सम्मिलित हैं।

3. निम्न जनसंख्या घनत्व का क्षेत्र (600 से कम) :

इस वर्ग के अन्तर्गत वर्ष 2001 में 11 विकासखण्ड तथा वर्ष 2011 में 4 विकासखण्ड बछरावां (598), शिवगढ़ (593), महराजगंज (586), सिम्हपुर (562) निम्न जनसंख्या घनत्व के अन्तर्गत सम्मिलित हैं।

लिंग अनुपात

विश्व की भांति भारत में भी लिंग अनुपात से अभिप्राय प्रति 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या से है। जनसांख्यिकीय विशेषताओं के अन्तर्गत लिंग अनुपात के अध्ययन का विशेष महत्व है। लिंगानुपात किसी देश एवं क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक ढांचे को प्रभावित करता है। विश्व में अन्य भागों की तरह भारत में भी जन्म के समय पुरुषों की संख्या स्त्रियों की अपेक्षा अधिक होती है। जनपद की कुल जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार 3405559 थी तथा लिंग अनुपात 943 थी जो 2001 के लिंग अनुपात 955 से कम है। लिंग अनुपात का क्षेत्रीय विश्लेषण तालिका–4 में दिया गया है।

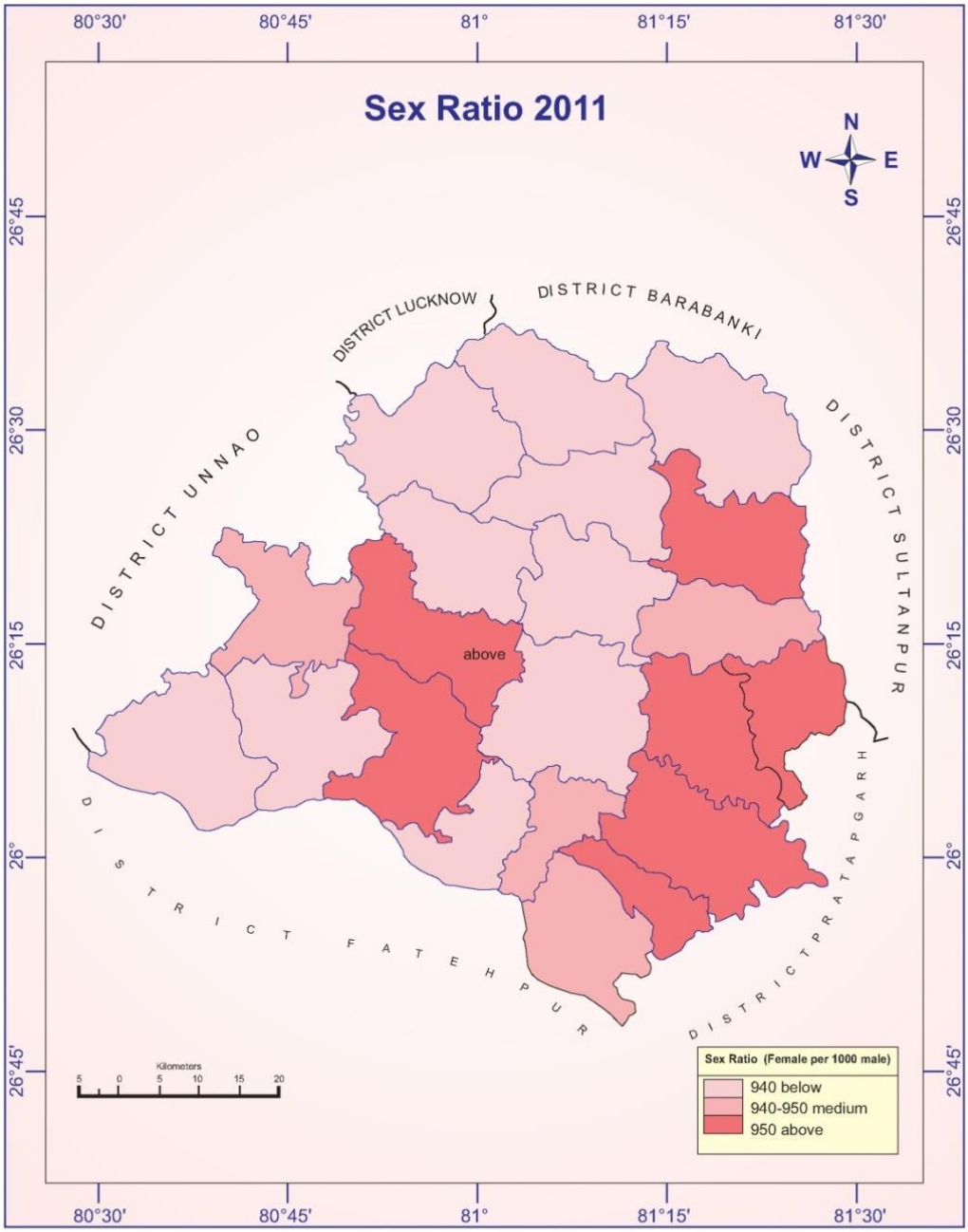

Source : District Census Hand Book-2011

Sex Ratio District Raebareli

तालिका–4 : जनपद रायबरेली – विकासखण्डवार लिंगानुपात प्रतिरूप

क्र.सं.	विकासखण्ड	लिंगानुपात	
		2001	2011
1.	बछरांवा	907	926
2.	शिवगढ़	923	928

3.	महाराजगंज	944	938
4.	सिम्हपुर	951	949
5.	तिलोई	969	961
6.	बहादुरपुर	933	945
7.	हरचन्दपुर	929	931
8.	अमांवा	919	930
9.	सतांव	986	951
10.	राही	925	925
11.	खीरो	976	947
12.	सरेनी	987	932
13.	लालगंज	977	932
14.	डलमऊ	981	951
15.	जगतपुर	971	944
16.	डीह	946	957
17.	छतोह	968	986
18.	सलोन	976	968
19.	ऊँचाहार	953	948
20.	रोहनिया	961	964
21.	दीनशाहगौर	970	935
	जनपद योग	943	951

स्रोत – भारत की जनगणना

तालिका–4 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में जनपद का औसत लिंग अनुपात जहाँ 943 था वहीं वर्ष 2011 में यह बढ़कर 951 हो गया है। अर्थात वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2011 में 8 अंकों की बढ़ोत्तरी हुई है। इस प्रकार जनपद में प्रति हजार पुरूषों पर 951 स्त्रियाँ हैं। शिशु लिंगानुपात वर्ष 2001 में जहाँ 926 था वहीं 2011 में यह बढ़कर 941 हो गया है। वर्ष 2001 में जनपद के सरेनी विकासखण्ड में सबसे अधिक लिंगानुपात (987) है तथा सबसे कम लिंगानुपात बछरांवा (907) विकासखण्ड में थी। तथा वर्ष 2011 में सबसे अधिक लिंगानुपात छतोह (986) विकासखण्ड में तथा सबसे कम लिंगानुपात राही (925) विकासखण्ड में स्थिति है। लिंगानुपात के कम होने का प्रमुख कारण अशिक्षा,

रूढ़िवादिता आदि है। परन्तु जैसे–जैसे सामाजिक जागरूकता बढ़ रही है वैसे – वैसे लिंग अनुपात में यह अन्तर कम हो रहा है।

साक्षरता :

साक्षरता का गरीबी उन्मूलन, मानसिक एकाकीपन का समाप्तिकरण, शान्तिपूर्ण तथा भाई बन्धु वाले अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धों के निर्माण और जनसांख्यिकीय प्रक्रिया की स्वतंत्र क्रियाशीलता में भारी महत्व है। साक्षरता का योगदान निर्धनता उन्मूलन, मानसिक अलगाव को कम करने अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति व मैत्री सम्बन्धों को स्थापित करने तथा जनांकिकीय प्रक्रियाओं के स्वतंत्र विकास को निर्धारित करने में बहुत अधिक है। (चान्दना, 1980 पृ. 96–98) व्यक्ति एवं समाज के विकास के लिए साक्षरता प्रथम सोपान है। मानव के साक्षरता का स्तर ही पृथ्वी के सतह पर संसाधनों के विकास के स्तर को प्रदर्शित करता है। साक्षरता का स्तर ही समाज के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास को निर्धारित करता है। जनपद रायबरेली में साक्षरता का प्रतिरूप तालिका–5 में दिया गया है।

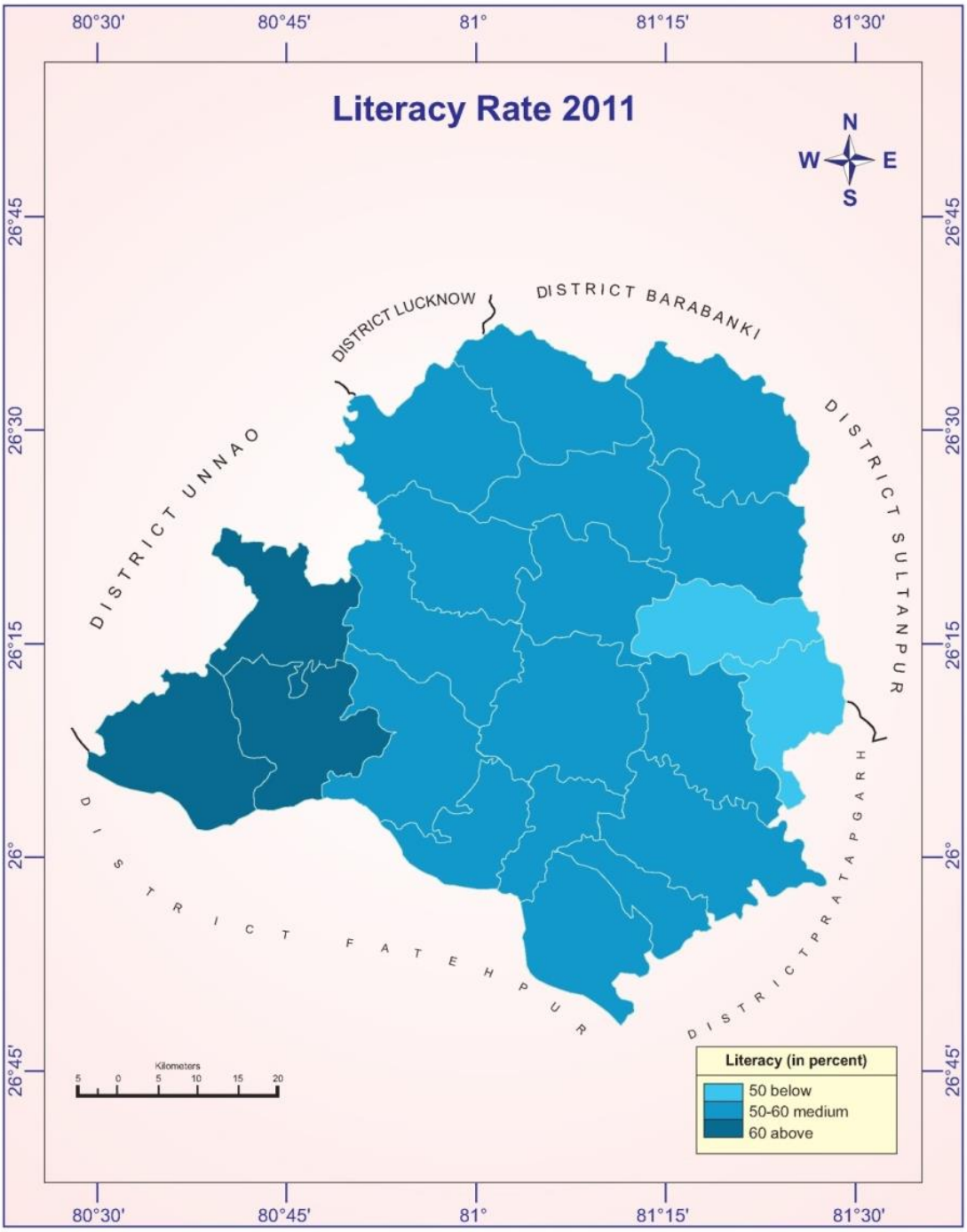

Source : District Census Hand Book-2011

Literacy Rate District Raebareli

तालिका–5 : जनपद रायबरेली – साक्षरता प्रतिरूप (प्रतिरूप में) 2011

क्र.सं.	विकासखण्ड	कुल साक्षरता	पुरुष साक्षरता	महिला साक्षरता
1.	बछरांवा	67.76	77.66	57.03
2.	शिवगढ़	67.05	77.70	55.58
3.	महाराजगंज	60.68	72.05	48.65
4.	सिम्हपुर	61.50	69.80	48.10
5.	तिलोई	62.10	74.10	48.05
6.	बहादुरपुर	56.25	68.91	44.20
7.	हरचन्दपुर	68.28	78.29	57.55
8.	अमांवा	68.28	76.81	55.01
9.	सतांव	67.58	78.13	56.59
10.	राही	66.52	77.33	54.82
11.	खीरो	70.65	81.97	58.82
12.	सरेनी	76.81	86.90	66.03
13.	लालगंज	75.54	85.56	64.85
14.	डलमऊ	59.9	69.44	49.89
15.	जगतपुर	68.87	79.52	57.61
16.	डीह	59.41	70.85	47.54
17.	छतोह	57.41	69.22	45.52
18.	सलोन	61.97	73.26	50.38
19.	ऊँचाहार	66.47	76.91	55.46
20.	रोहनिया	61.31	72.69	49.58
21.	दीनशाहगौर	68.39	79.03	57.07
	जनपद योग	67.25	77.63	56.29

स्रोत– भारत की जनसंख्या

तालिका–5 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि जनपद रायबरेली में कुल साक्षरता 67.25 प्रतिशत है जो भारत के साक्षरता 74.04 प्रतिशत से कम है। सबसे अधिक कुल साक्षरता विकासखण्ड जगतपुर (68.87 प्रतिशत) दिनशाहगौर (68.39 प्रतिशत), हरचन्दपुर (68.28 प्रतिशत), अमांवा (68.28 प्रतिशत) है तथा सबसे

कम कुल साक्षरता विकासखण्ड बहादुरपुर (56.25 प्रतिशत), छतोह (57.41 प्रतिशत) में है। तथा सबसे अधिक कुल पुरुष साक्षरता विकासखण्ड सरैनी (86.90 प्रतिशत), लालगंज (85.56 प्रतिशत), खीरो (81.97 प्रतिशत) में अंकित है। जबकि सबसे निम्न पुरुष साक्षरता विकासखण्ड डीह (70.85 प्रतिशत), छतोह (69. 22 प्रतिशत) में अंकित है। सबसे अधिक कुल महिला साक्षरता विकासखण्ड सरेनी (66.03 प्रतिशत), लालगंज (64.85 प्रतिशत) में है जबकि सबसे निम्न कुल महिला साक्षरता बहादुरपुर (44.20 प्रतिशत), छतोह (45.52 प्रतिशत), विकासखण्ड में अंकित है। अध्ययन क्षेत्र की साक्षरता दर भारत तथा उत्तर प्रदेश से कम होन का प्रमुख कारण शिक्षा का निम्न स्तर, निम्न जीवन स्तर, सामाजिक रूढ़ियां, शिक्षण संस्थानों की कमी आदि प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।

आयु लिंग अनुपात

जनसंख्या के जनसांख्यिकीय विशेषताओं में आयु वर्ग के अध्ययन द्वारा क्रियाशील जनसंख्या का अध्ययन किया जाता है। 0–14 आयु वर्ग के बच्चे तथा 60 वर्ष से ऊपर आयु वर्ग के लोगों को क्रियाशील जनसंख्या से बाहर रखा जाता है जिसे आश्रित जनसंख्या कहते हैं। जिस क्षेत्र की क्रियाशील जनसंख्या की कार्यक्षमता अधिक होती है। वहाँ विकास अधिक होता है। आयु–लिंग अनुपात के अध्ययन से ज्ञात होता है कि किसी आयु वर्ग में जनसंख्या का जितना प्रतिशत है। जनपद रायबरेली के आयु संरचना के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि प्रत्येक आयु वर्ग में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक है। विभिन्न आयु वर्गों में आयु एवं लिंग अनुपात को तालिका – 6 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका–6 : रायबरेली जनपद – आयु लिंग अनुपात (2011)

आयु–वर्ग	कुल जनसंख्या		कुल जनसंख्या (प्रतिशत में)	
	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
0–9	415913	370375	23.84	22.23
10–19	389132	380431	22.31	22.84
20–29	311413	280972	17.85	16.80
30–39	205794	205805	11.80	12.35
40–49	171892	175935	9.85	10.56
50–59	123333	118438	7.07	7.11
60 से अधिक	126478	133593	7.25	8.02
कुल योग	1743955	1665549	100	100

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा परिगणित

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि 0–9 आयु वर्ग तथा 20–29 आयु वर्ग को छोड़कर सभी आयु वर्ग में स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक है। 0–19 आयु वर्ग के अन्तर्गत 46.15 प्रतिशत पुरुष जनसंख्या तथा 45.07 प्रतिशत महिला जनसंख्या सम्मिलित है तथा 60 से अधिक आयु वर्ग में 7.25 प्रतिशत पुरुष जनसंख्या तथा 8.02 प्रतिशत महिला जनसंख्या सम्मिलित है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आश्रित जनसंख्या में लगभग पुरुष जनसंख्या 53.4 प्रतिशत तथा महिला जनसंख्या (53.09 प्रतिशत) सम्मिलित है। यह प्रतिशत देश के विकास के लिए अनुकूल नहीं माना जा सकता। 20–60 आयु वर्ग के अन्तर्गत पुरुष जनसंख्या (46.57 प्रतिशत) तथा महिला जनसंख्या (46.88 प्रतिशत) है। इस आयु वर्ग में जनसंख्या का प्रतिशत अधिक होना अर्थव्यवस्था के अनुकूल माना जाता है। जिससे कार्यशील जनसंख्या में वृद्धि होती है। तथा प्रति व्यक्ति आय एवं विकास में वृद्धि होती है। अध्ययन क्षेत्र में आश्रित जनसंख्या का प्रतिशत अधिक होना क्षेत्र के विकास के लिए अनुकूल नहीं है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि एक प्रमुख समस्या है, जिससे क्षेत्र के संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता है जिस कारण लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास जैसे आधारभूत आवश्यकताओं के लिए समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है यहाँ उद्योगों का विकास सीमित रूप में हुआ है। जिस कारण यहाँ

बेरोजगारी की समस्या है। नगरीकरण में वृद्धि तथा परिवहन साधनों का विकास एवं शिक्षा में सुधार तथा उद्योगों के विकास के द्वारा क्षेत्र की आधारभूत समस्याओं को दूर कर यहाँ विकास की गति में तेजी लायी जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वुड्स, रॉबर्ट (1979). पॉपुलेशन एनालिसिस इन ज्योग्राफी, लॉन्गमैन, लन्दन।
2. मिश्रा, ए0 (2007). जनसंख्या नियंत्रण शिक्षा एक उपाय, कुरुक्षेत्र जुलाई, वर्ष 53, अंक 09, पृष्ठ 23–28.
3. फिन्च, वी.सी. ट्रिवार्था, जी0टी0 (1968). एलीमेन्ट ऑफ पापुलेशन ज्योग्राफी (फिजिकल एण्ड कल्चरल), लन्दन पृष्ठ 56–58.
4. क्लार्क, जे. आई. (1972), पापुलेशन ज्योग्राफी, पर्गामैन प्रेस, ऑक्सफोर्ड।
5. चान्दना, आर.सी. (2002), जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 33–101.
6. जैलिन्स्की, डब्लू0 (1971), द हाइपोथेसिस ऑफ द मोबिलिटी ट्रांजिशन, ज्योग्राफिकल रिव्यू, अंक–1, पृष्ठ 219–249.